'RESEARCH JOURNEY' International Multidisciplinary E- Research Journal
Impact Factor - (CIF) - 3.452, (SJIF) - 3.009, (GIF) -0.676 (2013)
Special Issue 21 : भाषा, साहित्य आणि अनुवाद
UGC Approved No. 40705 & 44117
ISSN : 2348-7143
December 2017

अनुवाद : स्वरूप, आवश्यकता एवं समस्या

डॉ. अनिता नेरे (भामरे)
हिंदी विभाग, म.सा.गा.महाविद्यालय, मा.कैम्प

डॉ. योगिता हिरे
हिंदी विभागाध्यक्ष, एल. व्ही. एच. कॉलेज, पंटवटी, नाशिक

अनुवाद मनुष्य के जीवन के साथ जुड़ी हुई एक सहज एवं स्वाभाविक प्रक्रिया है । विज्ञान के प्रचार-प्रसार के कारण विश्व नजदीक आ गया है । भिन्न भाषी होने पर भी मनुष्य की एक दूसरे को समझने की तीव्र इच्छा, अन्य भाषी के सोच-विचार को जानने की जिज्ञासा तथा अपनी बातें दूसरों तक और दूसरों की अपने लोगों तक पहुँचाने की प्रबल कामना से ही अनूदित साहित्य का निर्माण हुआ ।

अनुवाद की परंपरा बहुत प्राचीन है । अतीत में शिक्षा का स्वरूप मौखिक था । इसमें गुरू बोलते थे और शिष्य उसे दोहराते थे । इसे 'अनवदति' कहा जाता था । अर्थात गुरू के पीछे - पीछे बोलना इतना ही उसका रूप सीमित था । इस दृष्टि से किसी बात को दुहराकर याद करना याने 'अनुवाद' कहा जा सकता है ।

अनुवाद शब्द संस्कृत भाषा का है । उसका संबंध 'वद्' धातु से है । 'वद्' याने कहना या बोलना । इस 'वद्' धातु में 'धात्र' प्रत्यय जुड़ने से 'वाद' शब्द बना और उसमें 'अनु' उपसर्ग जुड़ने से 'अनुवाद' शब्द का निर्माण हुआ । अनुवाद शब्द का अर्थ है 'पुनः कथन' या किसी के कहने के बाद कहना ।

अनुवाद की सर्वसामान्य परिभाषा इस प्रकार दी जा सकती है कि, "एक भाषा की किसी सामग्री का किसी दूसरी भाषा में रूपांतर ही अनुवाद है ।" अर्थात स्त्रोत याने एक, मूल भाषा में व्यक्त विचारों को लक्ष्य अर्थात दूसरी, अभिप्रेत भाषा में व्यक्त करना अनुवाद है ।

अज्ञेय जी के अनुसार "हमारे विचारों तथा तात्पर्य को एक भाषा से दूसरी भाषा में रूपांतरित करना ही अनुवाद है ।"[१]

जे. सी. केरफोर्ड - 'अनुवाद स्त्रोत भाषा की पाठ सामग्री को लक्ष्य सामग्री के समानार्थी प्रतिस्थापित करने की प्रक्रिया है ।"[२]

डॉ. भोलानाथ तिवारी - "एक भाषा में व्यक्त विचारों को यथासंभव समान और सहज अभिव्यक्ति द्वारा दूसरी भाषा मे व्यक्त करने का प्रयास अनुवाद है ।"[३]

उपर्युक्त परिभाषा में अनुवाद का स्वरूप इसप्रकार स्पष्ट होता है ।

१) अनुवाद का उद्देश्य : एक भाषा में व्यक्त भाव या विचार लक्ष्य भाषा में यथासंभव मूल रूप में लाना है।

२) अनुवाद के लिए स्त्रोत भाषा में भावों या विचारों को व्यक्त करने के लिए जिस अभिव्यक्ति का प्रयोग किया गया है, उसके निकटतम अभिव्यक्ति की खोज लक्ष्य भाषा में होनी चाहिए ।

३) स्त्रोत भाषा में व्यक्त विचारों को लक्ष्य भाषा में अभिव्यक्त करते समय उनकी अभिव्यक्ति लक्ष्य भाषा की प्रकृति के अनुकूल हो, सहज हो । उस पर किसी प्रकार से स्त्रोत भाषा का प्रभाव न हो ।

अनुवाद की आवश्यकता :

अनुवाद एक भाषा की किसी सामग्री का दूसरी भाषा में रुपांतर है । आधुनिक युग में मानव एक - दूसरे पर निर्भर है । मात्र किसी भी व्यक्ति के लिए सभी भाषाओं को आत्मसात करना संभव नही है । मानव जाति अपने

Scanned with CamScanner

पूर्वजों के भावों और विचारों से परिचित होने के लिए उन्हें अपनी वर्तमान भाषा में लाने की इच्छुक रहती है और यह प्रक्रिया अनुवाद के कारण ही सफल होती है ।

अनुवाद की प्रक्रिया मनुष्य के जीवन से जुड़ी है । मनुष्य के आपसी बातचीत के लिए, एक - दूसरे के विचारों को समझने, समझाने के लिए अनुवाद की आवश्यकता है । आज इस आवश्यकता की सीमा बढ़ रही है । प्रगति के नए - नए क्षेत्र निर्माण हो रहे हैं और हर पथ पर अनुवाद अपनी सफल भूमिका निभा रहा है । आपसी समन्वय भावात्मक एकता, ज्ञान - वृध्दि, संस्कृति परिचय, राष्ट्रीय एकता, शोध कार्य, व्यापार - वृध्दि, विधि आदि क्षेत्रों में अनुवाद के बिना कार्य संभव नहीं है । अनुवाद का सबसे बड़ा क्षेत्र बातचीत का है । भिन्न भाषा भाषी व्यक्ति के साथ बातचीत करते समय अनुवाद का सहारा लेना पड़ता है ।

पत्राचार में भी अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है । यह पत्राचार विविध स्तरों - व्यापार, प्रशासन, न्यायालय, शोधकार्य आदि पर होता है । उदा. महाराष्ट्र का मनुष्य आकाम में पत्र भेजे तो उसे समझने के लिए अनुवाद आवश्यक है । साथही भारत में अदालतों की भाषा प्रायः अंग्रेजी रही है । मुकदमों के आवश्यक प्रारंभिक कागजात प्रादेशिक भाषा में होते है तथा लोग उसी भाषा में बात प्रस्तुत करना या निर्णय सुनना पसंद करते हैं । अतः उनका अनुवाद करना आवश्यक हो जाता है ।

भारत में अधिकांश कार्यालयों की भाषा अंग्रेजी है । वहाँ के कार्य पत्र, परिपत्र सब अंग्रजी में ही होते है । सामान्य जनता में अंग्रेजी का प्रचार-प्रसार न होने से जनता से संपर्क के लिए अनुवाद की आवश्यकता होती है । शिक्षा के क्षेत्र में भी अनुवाद का महत्व रहा है । वहाँ सभी क्षेत्रों में विज्ञान, वाणिज्य, समाजशास्त्र, राजनीति विदेशी भाषाओं में उत्तम ग्रंथ लिखे गए हैं । उनका अनुवाद करना ज्ञानवृध्दि के लिए आवश्यक है । विश्वभाषाओं में प्राप्त वैज्ञानिक सामग्री का अनुवाद अंग्रेजी, रुसी, जापानी भाषा में होता है । अगर इसे आत्मसात करना है तो अनुवाद के बिना काम नहीं चलेगा । रेडिओ, आकाशवाणी, दूरदर्शन पर भारत में प्रचलित प्रमुख भाषाओं में वार्ता प्रसारित की जाती है । अर्थात यहाँ भी अनुवाद की आवश्यकता महसूस होती है ।

साहित्य तो अनुवाद कार्य का एक प्रमुख क्षेत्र है । साहित्यकार की प्रतिभा देश और भाषा के सीमा के परे होती है । अनुवाद के सहारे ही हम अन्य भाषी प्रतिभाओं को पहचान सकते है । साहित्य के सभी क्षेत्रों में आज बड़े पैमाने पर अनुवाद हो रहे हैं । केवल पाश्चात्य ही नहीं तो संस्कृत, पाली, लैटिन जैसी मूल भाषाओं के ग्रंथों के भी अनुवाद हुए हैं, हो रहे हैं । तुलनात्मक अध्ययन के लिए भी अनुवाद की आवश्यकता होती है । दो भाषाओं के साहित्य विचारों तथा भाषाशास्त्र संबंधी तुलना से मानव मनोविज्ञान के अनेक अज्ञात तथ्यों का सहस्योद्घाटन किया जा सकता है । विश्वविद्यालयों में विदेशी भाषा विभाग खुल जाने से इस स्थिति में और भी शक्ति पैदा हुई है ।

इतना ही नहीं साहित्य की समृध्दि के साथ - साथ भाषा की समृध्दि भी अनुवाद के कारण संभव होती है । कई बार अनुवाद करते समय स्त्रोत भाषा में समतुल्य शब्द न मिलने पर लक्ष्य भाषा के शब्द लिए जाते हैं । उदा. संस्कृत के मोक्ष, ब्रहम, यज्ञ जैसे शब्द पाश्चात्यों ने भी वैसे ही अपनाए है । विश्व में शांति बनाए रखने हेतु आज अंतर्राष्ट्रीय संबंधों पर बल देते हुए विभिन्न राजदूत तथा प्रतिनिधियों के संवाद मौखिक अनुवाद के सहारे किया जाता है । ऐसे समय अनवादक तथा दुभाशिए के माध्यम से चर्चा सफळ होती है । आज तो इतनी प्रगति हुई है कि किसी भाषा में भाषण क्यों न दे श्रोता वे विचार संगणक की सहायता से अपनी भाषा में सुन सकत है ।

धर्म के क्षेत्र में भी अनुवाद का सहारा लिया जाता है । हिंदू, मुस्लिम, बौध्द धर्म ग्रंथ क्रमशः संस्कृत, अरबी - फारसी, पाली भाषा में होते है । इन धर्मों को जानने के लिए, सर्वधर्मसमभाव की भावना को विकसित करने के लिए अनुवाद अनिवार्य होता है ।

Scanned with CamScanner

अनुवाद सांस्कृतिक सेतु का काम करता है । धर्म, दर्शन, साहित्य, शिक्षा, विज्ञान, व्यवसाय, राजनीति जैसे विभिन्न पहलुओं क अनुवाद से अभिन्न संबंध हैं । विश्व संस्कृति के निर्माण में विभिन्न संस्कृतियों में आदान-प्रदान आवश्यक है और यह काम अनुवाद से ही संभव है ।

आज पाश्चात्य संस्कृति भारतीय संस्कृति का अनुकरण कर रही है । यह अनुवाद के कारण संभव है । अनुवाद के सहारे विश्व साहित्य का निर्माण हो रहा है । जर्मन कवि गटे को विश्व साहित्य की परिकल्पना को विकसित करने की प्रेरणा 'शाकुंतल' के अनुवाद को पढ़कर मिली थी ।

इसतरह जिस प्रकार किसी देश की आंतरिक प्रगति के लिए अनुवाद आवश्यक है, उसी प्रकार पूरे मानव समाज की प्रगति के लिए भी वह अनिवार्य है । 'वसुधैव कुटुंबकम' की भावना आज साकार हो रही है और इस कल्पना को प्रत्यक्ष में साकार करने का काम अनुवाद के सहारे हो रहा है । अनुवाद के द्वारा ही मानृव के इस विश्व कुटुंब में एकता तथा भाईचारे को विकसित करके मानवता के मूल बिंदू तक पहुँचा सकता है । मनुष्य - मनुष्य में निकटता स्थापित करने के लिए आज अनुवाद की बहुत बड़ी आवश्यकता है और इस युग की माँग भी ।

संदर्भ सूची

१) अनुवाद विज्ञान : स्वरूप एवं व्याप्ति - डॉ. मुरलीधर शहा य सरोदे, पृ.१०
२) अनुवाद प्रक्रिया : डॉ. रीतारानी पालीवाल, पृ.१४
३) हिंदी स्वरूप और समस्याएँ : डॉ. बालेनु शेखर तिवारी य वैरागी, पृ. १९१

Scanned with CamScanner